IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बृज प्रदेश की धार्मिक संरचना एवं सांस्कृतिक यात्रा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]डॉ. सत्यवीर सिंह
[1]सहायक आचार्य
[1]राजनीतिशास्त्र विभाग
[1] आर.बी.एस. महाविद्यालय, आगरा

सारांश : विश्व में सर्वोत्तम संस्कृतियों में बृज प्रदेश की संस्कृति का नाम आता है। बृज संस्कृति से अभिप्रेत भारत वर्ष का हृदय है। भारत में बृज जनपद की संस्कृति महत्वपूर्ण तथा महिमामयी है। इसी कारण बृज का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वर्तमान समय में मथुरा जिले के समीपवर्ती प्रदेश को बृज के नाम से जाना जाता है। बृज भूमि की चौरासी कोस की परिक्रमा की यात्रा हजारों वर्ष पुरानी है। चौरासी कोस की यात्रा का उल्लेख वेद, पुराण, श्रुति ग्रन्थ संहिता आदि में भी मिलता है। इस परिक्रमा के अंतर्गत 1300 से अधिक गांव 1000 सरोवर, 12 वन, 25 उपवन 16 कदम्बखण्ड, देवी मंदिर और अनेक पर्वत और यमुना घाट पड़ते हैं। वराह पुराण के अनुसार पृथ्वी पर 66 अरब तीर्थ हैं और सभी तीर्थ चातुर्मास में बृज में आकर निवास करते हैं। इसीलिए हजारों श्रदालु बृज परिक्रमा के लिए आते हैं। ऐसी मान्यता है कि 84 कोस की परिक्रमा लगाने से 84 लाख योनियों से छुटकारा मिल जाता है।

संकेताक्षर: बृज प्रदेश, सांस्कृतिक यात्रा, बृज संस्कृति 84 कोस परिक्रमा।

प्रस्तावना

बृज प्रदेश अति प्राचीनकाल से ही एक सुप्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र रहा है। यहां की संस्कृति का मौलिक आधार और इसकी मूल चेतना भी धर्म है। अतः यह एक धार्मिक संस्कृति है। बृज को यह गौरव प्राप्त है कि यहां पर भारत के प्रायः सभी प्रमुख धर्म सम्प्रदायों का विकास हुआ था और यहां की धार्मिक संस्कृति ने विभिन्न कालों में देश के अधिकांश भागों को प्रभावित किया।[1] परिक्रमा लगाने से कदम-कदम पर जन्म जन्मांतर के पाप दूर हो जाते हैं। बृज प्रदेश में विभिन्न धर्मों की संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है-

हिन्दू धर्म: हिन्दू धर्म सनातन धर्म है। बृज प्रदेश में हिन्दू धर्मावलम्बियों की जनसंख्या है। 2173217 है। हिन्दू धर्म 2173217 के अतिरिक्त यहाँ प्राप्त अन्य धर्म भी हिन्दू धर्म के ही सम्प्रदाय या शाखा है। परन्तु संविधान में इन्हें हिन्दू धर्म से पृथक धर्म मानने का अर्थ अंग्रेजों की सोची समझी चाल लगती है। हिन्दू धर्म की सामान्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

- हिन्दू एक सर्वोच्च सत्ता तथा अनेक देवी देवताओं में पूर्ण आस्था रखते हैं।
- कोई भी व्यक्ति किसी देवी देवता की आराधना कर सकता है ये उदार हृदय वाले तथा सहनशील संवेदनशील होते हैं।
- हिन्दू मृत्यु, पुनर्जन्म कर्म तथा मोक्ष में विश्वास करते हैं।

बृज प्रदेश का वास्तविक रूप धार्मिक है। यह कृष्ण भक्ति के कारण प्रकाश में आया है। इसके फलस्वरूप भगवान कृष्ण के प्रति श्रद्धा रखने वाले भक्त जनों के लिए वे सभी स्थल तीर्थ रूप हो गये हैं जहां उनके उपास्य देव ने जन्म लिया था तथा अपनी बाल लीलाएं की थी। उन सभी के साथ वे वन भी परम पावन और पुण्यप्रद माने जाने लगे जहां श्रीकृष्ण ने गोप बालकों के साथ गायें चराई थीं अथवा गोप बालाओं के साथ नाना प्रकार की क्रीड़ायें की थीं वे पुण्य स्थल और पावन वन समस्त कृष्ण भक्तों के आकर्षण केन्द्र बन गये हैं। बृज क्षेत्र में हिन्दू धर्म को मानने वाले 89.51 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।[2]

मुस्लिम धर्म: इस्लाम मजहब का पालन करने वाले व्यक्ति मुसलमान कहलाते हैं इस मजहब की स्थापना हजरत मोहम्मद साहब ने 7वीं शताब्दी में अरब देश में की थी। वहां के मक्का और मदीना नगरों का मोहम्मद साहब के जीवनवृत्त से घनिष्ठ सम्बन्ध था इसलिए ये दोनों नगर मुसलमानों के पवित्र स्थान हैं। इनकी हज करना प्रत्येक मुसलमान अपना मजहबी फर्ज मानता है। इस्लाम के धर्मस्थान मस्जिदें हैं। जहाँ मुल्लाओं के नेतृत्व में मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। इस्लाम में प्रचार की पद्धति अन्य धर्मावलम्बियों से सर्वथा भिन्न रही है। बृज प्रदेश में मुस्लिम जनसंख्या 243721 निवास करती है जिसका प्रतिशत 10.03 है।

ईसाई धर्म: ईसाई धर्म भी प्राचीन धर्मावलम्बी है। जिनका प्रादुर्भाव दक्षिण पूर्वी यूरोप के पिछड़े हुए कबीलों में हुआ था। इनकी मान्यता है कि परमात्मा ने अपने प्रिय पुत्र यीशू को संसारी जनों के पापों का शमन कर उन्हें सत्मार्ग में जाने के लिए इस जगत में भेजा। यह मान्यता वहां के पिछड़े हुए कबीलों को स्वीकृत नहीं थी। उन्होंने प्रभु यीशू को अत्यंत निर्दयता से शूली पर चढ़ाकर मार डाला था, किन्तु यीशू ने उन पर क्रोध नहीं किया और परमात्मा से उन्हें क्षमा करने की प्रार्थना की थी। प्रभु यीशु दया, क्षमा, अक्रोध और प्रेम के अवतार थे। उनकी स्मृति में ईसवी सन् प्रचलित है।
ईसाई धर्म के पादरी विशप कहलाते हैं। इनके प्रार्थना स्थल गिरजाघर कहे जाते हैं। ये अस्पताल विद्यालयों आदि से मानव समाज की सेवाकर अपने धर्म का प्रचार करते है। ये लोग समस्त संसार में फैले हुए है। इनकी बहुत बड़ी संख्या है। ईसाई धर्म का प्रथम प्रवेश मुगल सम्राट अकबर के शासन काल में 16वीं शताब्दी में हुआ था। उस समय गोवा में जो पुर्तगाली बसे हुए थे वे ईसाई मत के मानने वाले थे। उन्होंने सम्राट से अनुमति प्राप्त कर अपने पादरियों द्वारा फतेहपुर सीकरी में एक छोटा गिरजाघर बनवाया था और एक अस्पताल खोला था। उसके बाद आगरा में भी गिरजाघर बनवाया गया। उनके द्वारा वे बड़ी शान्तिपूर्वक ईसाई मत का प्रचार करते थे। सम्राट अकबर से लेकर शाहजहाँ के शासनकाल तक विदेशी ईसाई पादरी अपने मत का प्रचार प्रायः नहीं के बराबर किया था।[3]

सिक्ख धर्म: सिक्ख धर्म 16 वीं शताब्दी में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत उदित हुआ। इस धर्म में अनेक देवी-देवताओं, मूर्ति पूजा, जाति प्रथा आदि का खण्डन किया गया है। मुसलमानों की क्रूरता से रक्षा के लिए सिक्ख धर्म की नींव पड़ीं। इस धर्म में धूम्रपान व तम्बाकू के सेवन पर पूर्ण निषेध है। ये मुख्यतः शारीरिक रूप से हष्ठ-पुष्ट सामान्यतः ईमानदार व कर्मठ होते हैं। इस धर्म को मानने वाले लोग निर्गुण-निराकार, अकाल परम पुरूष के अनुयायी हैं। इनके पंथ के प्रवर्तक नानक संत महापुरूष थे। वे पंजाबी खली थे और उनका जन्म सन् 1469 ई0 की कार्तिक शुक्ल एकादशी तदनुसार 15 अप्रैल सन् 1469 में तलबंडी नामक स्थान में हुआ था। यह स्थान इस समय पाकिस्तान में है और नानक जी का जन्म स्थान होने से ननकाना कहलाता है।

नानक जी ने अपने समय के अधर्म, अन्याय, अत्याचार, ढोंग, पाखण्ड, छूआछूत और भेदभाव के विरूद्ध बड़ा संघर्ष किया था और उसमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने स्त्रियों को पुरूषों की बराबरी का दर्जा दिया।

बौद्ध धर्म : बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म की ही शाखा है जिसके प्रवर्तन ईसा पूर्व 6 शताब्दी में गौतम बुद्ध ने किया। बृज प्रदेश में कुषाणों के समय में बौद्ध धर्म की जो शासकीय संरक्षण उपलब्ध था वह बाद में समाप्त हो गया, परन्तु बौद्ध धर्म का अस्तित्व यहां कई शताब्दियों तक बना रहा। महात्मा बुद्ध की कुछ उत्कृष्ट प्रतिमायें बृज प्रदेश में गुप्तकाल में निर्मित हुई थी जिनके समान कलापूर्ण मूर्तियाँ भारत में अन्यत्र दुर्लभ है। चीनी यात्री फाह्यान ने जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में आया, यहां की धार्मिक स्थिति का कुछ हाल अपने यात्रा विवरण में दिया है। उसके अनुसार मथुरा के 20 संघारामों का उल्लेख किया है जिनमें लगभग 3000 बौद्ध भिक्षु रहते थे। उसने 6 बौद्ध स्तूपों का भी परिचय दिया है। 7वीं शताब्दी में दूसरा चीनी यात्री व्हेन्सांग उत्तर भारत में आया उसने बृज प्रदेश के आसपास थानेश्वर, शत्रुघ्न पयत्रि, मतिपुर, गोविशाण, अहिच्छत्रा, पिलोसन्न सांकाश्य आदि अनेक स्थान देखे। इन स्थानों में उसने हीनयान और महायान दोनों मतों के अनुयायी पाये। उसे हीनयानियों की संख्या अधिक मिली। हव्हेन्सांग ने बृज प्रदेश में 20 बौद्ध संघाराम देखे, जिनमें 2000 भिक्षु रहते थे और दोनों मतों के शास्त्रों का अध्ययन करते थे। बृज प्रदेश में 0.05 प्रतिशत बौद्ध धर्म को मानने वाली जनसंख्या निवास करती है।[4]

जैन धर्म: जैन धर्म हिन्दू धर्म की एक शाखा है ये जीवों के प्रति अहिंसा पर अधिक बल देते हैं यह अधिकांशतः व्यापारी होते हैं जो देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं और देश की जनसंख्या का मात्र 0.5 प्रतिशत ही हैं प्राचीनकाल में मथुरा नगर जैन धर्म का भी एक प्रमुख केन्द्र बना। प्राचीन जैन साहित्य में शूरसेन जनपद और मथुरा नगर के सम्बन्ध में प्रचुर उल्लेख मिलते हैं। गत शताब्दी में मथुरा के प्रसिद्ध कंकाली टीला की खुदाई से अन्य महत्वपूर्ण सामग्री के साथ ई0. दूसरी शताब्दी का एक लेख भी मिला, जिसमें इस टीले पर देवनिर्मित बौद्ध नामक स्तूप का उल्लेख है।
विद्वानों के अनुसार इस स्थान पर प्राचीनतम स्तूप का निर्माण ईसा पूर्व 6 शताब्दी में या इसके भी कुछ पहले हुआ होगा। जैन अनुश्रुति के अनुसार सातवें तीर्थंकर सुपाश्वनाथ के समय में ही मथुरा में एक रत्नजडित स्तूप का निर्माण

कुबेरा देवी नामक महिला द्वारा किया गया था। 23 वे तीर्थंकर भगवान पाश्र्वनाथ के समय में स्वर्ण स्तूप को ईंटों से आवंटित कर सुरक्षित बनाया गया। बाद में भी इस स्तूप का जीर्णोद्धार होता रहा और ई. 10 वीं शताब्दी तक देव निर्मित स्तूप उत्तर भारत का एक प्रमुख जैन केन्द्र रहा।

जैन ग्रन्थों में वर्णित है कि अन्तिम जैन तीर्थांकर भगवान महावीर भी मथुरा आये तत्कालीन मथुरा शासक का नाम उदितोदय या भीदम्य मिलता है। महावीर स्वामी के प्रधान शिष्य गणधर इन्द्रभूति के शिष्य सुधर्माचार्य हुए। उनके उत्तराधिकारी जम्बू स्वामी की तपस्या और निर्माण स्थल मथुरा का वर्तमान चैरासी नामक स्थान माना जाता है। बृज प्रदेश में जैन धर्म को मानने वाले 0.16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।[5]

बृज प्रदेश के धार्मिक उत्सव, त्यौहार एवं मेला

बृज संस्कृति सदैव से ही उत्सव प्रिय रही है। बृज के सभी उत्सव प्रकृति परिवर्तन और धार्मिक अनुभूति पर आधारित है। बृज में कोई ऋतु और उसका कोई भी महीना क्यों न हो। यहां प्रायः उत्सव और त्यौहार मनाये जाते रहते हैं। इन उत्सव और मेले का आनन्द प्राप्त करने के लिए यहां भारतवर्ष के कोने-कोने से लाखों यात्री प्रतिवर्ष आते रहते हैं। बृज प्रदेश के सभी उत्सव त्यौहार और मेले धार्मिक भावना से अनुप्राणित है। इनका संबंध किसी न किसी देवता से जुड़ा है। वैसे तो वे अधिकतर राधाकृष्ण की लीलाओं के रंग में रंगे हुए हैं किन्तु ऐसे भी अनेक उत्सव हैं जिन पर अन्य देवी देवताओं का भी प्रभाव है। ऐसे समारोहों में शिव चैदस, देवी अष्टमी, रामनवमी के साथ जाहरपीर, कुआ वाला, जखैया आदि की पूजा के लोकोत्सव उल्लेखनीय हैं जो शिव शक्ति लोक देवता यक्षादि से संबंधित है। नागपंचमी और तट पीपल की पूजा विषयक लोक त्यौहारों पर आदिम काल की सर्प पूजा अथवा वृक्षा पूजा की छाया स्पष्टता दृष्टिगोचर होती है फिर भी बृज के अधिकांश उत्सव त्यौहार राधा कृष्ण की लीलाओं से ही प्रभावित हैं।[6]

मध्यकाल में बृज प्रदेश का धार्मिक स्वरूप

मध्यकाल में मथुरा मण्डल वैदिक एवं वेदोक्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रधान केन्द्र था। भागवत धर्म का तो वह प्रमुख गढ़ ही था। महमूद गजनबी के भीषण आक्रमणों से इस देश की जो आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षति हुई थी, उसका दुष्परिणाम सबसे अधिक मथुरा मण्डल को भोगना पड़ा था। महमूद और उसके बर्बर सैनिकों ने लूट के लालच में अपने मजहबी तास्सुव से मथुरा मण्डल के सैकड़ों सुप्रसिद्ध मंदिर देवालयों के साथ श्रीकृष्ण जन्मस्थान के उस विख्यात केशव मंदिर को भी क्षतिग्रस्त कर दिया जिसे प्रायः 6वीं शताब्दी पूर्व चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने निर्मित कराया था। उन मंदिरों में भेंट स्वरूप जो विपुल संपत्ति कई शताब्दियों से संचित होती आ रही थी उस सबको उक्त विदेशी लुटेरे ने एक ही बार में लूट लिया और उसे सैकड़ो ऊँटों पर लादकर वह गजनी ले गया। जिसके कारण मथुरा नगर एक बार तो वीरान सा हो गया था।

महमूद के आक्रमण के पश्चात् मथुरा मण्डल पर कन्नौज के गहडवंशीय नरेशों का अधिकार रहा था। उस वंश के सुप्रसिद्ध राजा विजयपाल ने शासनाधिकार प्राप्त करते ही सर्वप्रथम मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर महमूद द्वारा ध्वस्त किये गये केशवराय जी के मंदिर को नया रूप प्रदान किया। जिससे वह पहले से भी अधिक सुन्दर और सम्पत्तिशाली हो गया था। मध्यकाल में उत्तर भारत में बौद्ध जैन जैसे अवैदिक धर्मों को बोलबाला था। मथुरा मण्डल में भी उसका पर्याप्त प्रभाव था, जिसके कारण भागवत् धर्म के अनुयायियों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही थी और बौद्ध जैन धर्मों के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हो रही थी।

उत्तरी भारत में प्रभावहीन हो जाने पर भी भागवत धर्म दक्षिणी भारत में फूलता फलता था। कालान्तर में वह कुमारिल भट्टाचार्य और शंकराचार्य के प्रयत्नों से विशिष्ट मान्यताओं से समन्वित होकर वैष्णव धर्म का भी पुनरूद्धार एवं पुनरूत्थान हुआ था। उसके कारण वेद विरोधी बौद्ध एवं जैन धर्म का ह्रास होने लगा। उसका यह परिणाम हुआ कि बौद्ध धर्म भारतवर्ष से तो लुप्त प्रायः हो गया किन्तु विदेशों में वह प्रचलित रहा।

विदेशों मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा मथुरा मण्डल तथा अन्य निकटवर्ती स्थानों के मंदिर देवालयों की जो भीषण क्षति हुई थी। उसकी बहुत कुछ पूर्ति उस काल के राजपूत राजाओं ने कर दी थी। उस समय पौराणिक हिन्दू धर्म का भी नवोत्थान हुआ था, मथुरा उसका बड़ा केन्द्र तथा प्रसिद्ध तीर्थस्थल माना जाता था। उस काल के अनेक राजपूत राजागण पौराणिक हिन्दू धर्म के अनुयायी थें अतः उन सबको मथुरा मण्डल की धार्मिक महत्ता मान्य थी। यद्यपि वे राजागण आपस में लड़ा करते थे किन्तु मथुरा के प्रति उन सबकी समान रूप से श्रद्धा थी।[7]

मुसलमानों से पहले भी इस देश पर विदेशियों के आक्रमण हुए थे और उन्होंने मुसलमानों की तरह यहां लूटमार भी की थी। किन्तु उनके द्वारा यहां की धार्मिक स्थिति पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पडा था। उसका कारण यह था कि उन आक्रमणकारियों को अपने किसी धर्म का आग्रह नहीं था और वे अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णु भी नहीं थे। यहां तक कि वे भारतीय धर्मों को स्वीकार कर स्वयं उनके समर्थक एवं प्रचारक हो गये थे। उनके विरूद्ध मुसलमानों के आक्रमण का उद्देश्य ही अपने धर्म का प्रचार करना था जिसे उन्होंने तलवार के बल पर किया था। उस काल के प्रायः सभी धर्मों में मूर्ति पूजा मान्य थी और मथुरा में उन सबके मंदिर देवालय और पूजा स्थान थे। इस्लाम में मूर्ति पूजा को कुफ्र माना

गया है। अतः उस काल के मुसलमान आक्रमणकारी देव स्थानों को नष्ट भ्रष्ट कर उनकी मूर्तियों को तोड़ना अपना मजहबी फर्ज समझते थे। महमूद गजनबी और उसके पश्चात् मुहम्मद गोरी तथा उनके उत्तराधिकारियों ने भी वैसा ही कुकृत्य किया था।

सल्तनत काल में बृज की धर्मोपासना

वैष्णव धर्म या भागवत धर्म: शूरसेन जनपद अर्थात् प्राचीन बृजमण्डल से श्रीकृष्ण के काल में वासुदेवोपासक धर्म की जो निर्मल धारा निकलकर द्वारका गयी थी उसने वहां चलकर, सौराष्ट्र, विदिशा, विदर्भ और कर्नाटक आदि प्रदेशों में धीरे-धीरे प्रवाहित होने के उपरान्त दक्षिण के तमिल प्रदेश में पहुँच कर विराम लिया था। लेकिन 12वीं शताब्दी के पश्चात् वैष्णव धर्म के भक्ति तत्व की वह निर्मल धारा वैष्णव धर्माचार्यों द्वारा दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवाहित की गयी थी और जो अपने जन्मस्थान बृजमण्डल में जाकर वहां परम्परा से प्रचलित भागवत धर्म के परवर्ती रूप के साथ मिलती हुई कई शाखाओं के रूप में फैल गयी थी। जिस काल में उत्तरी भारत में विदेशी मुसलमानों के समय आक्रमणों के पश्चात् इस्लामी सल्तनत की स्थापना का प्रयत्न हो रहा था उसी काल में वैष्णव धर्माचार्यों ने बृज में आकर कृष्ण भक्ति के व्यापक प्रचार का आयोजन किया था। उनका उद्देश्य विधर्मी आक्रमणकारियों द्वारा सतायी हुई धर्म प्राण जनता को सांत्वना देना और उसे भगवान् श्रीकृष्ण पर आश्रित रहने का उपदेश देना था।

बृज प्रदेश की सांस्कृतिक यात्रा

भारतीय संस्कृति विश्व की संस्कृतियों से भिन्न अन्यतम संस्कृति है, और भारतीय संस्कृतियों में बृज लोक-संस्कृति की अलग पहचान है। इसीलिए बृज लोक संस्कृति संसार की श्रेष्ठतम संस्कृति कहलाती है।[8] किसी भी देश की लोक संस्कृति को समझना हो तो सर्वप्रथम उस प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्यों को समझना और जानना होगा क्योंकि लोक संस्कृति किसी भी देश, समाज और समुदाय की सम्पन्नता की सूचक होती है। ग्रामीण जीवन के रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, धार्मिक आस्था, राशि, उत्सव, लोक पर्व, मेला, लोक कलाएं, लोक गीत, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गाथाओं और व्यापार सभी कुछ श्री सम्पदा की ओर आकर्षित करते है। लोक जीवन का पहनावा, ओढ़ावा, शोक-श्रृंगार, आहार-विहार, भजन कीर्तन सभी लोक संस्कृति के सशक्त आधार है।

लोककर्म- जन्म से लेकर मरण तक के लोक संस्कार लोक जीवन के प्रत्येक क्षण में उपस्थित रहते है। यही लोक जीवन के विभिन्न तत्व हमारे बृज प्रदेश के सांस्कृतिक मूल्य बन जाते है।[9]

बृज परिक्रमा के अंतर्गत बृज मण्डल के वन उपवन, कुण्ड, सरोवर, बृज के गांव मंदिर और लीला स्थलों के दर्शन किये जाते हैं, जिसमें 84 कोस के वन उपवन की परिक्रमा की जाती है परिक्रमा देने वाले को वन यात्री कहा जाता है। यह परिक्रमा वैशाख कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर सावन की पूर्णमासी पर समापन को जाती है। इस यात्रा में 12 वन, 24 उपवन 16 वटवृक्ष, प्राचीन मंदिर आदि आते हैं। इसे वन-यात्रा भी कहते हैं। इसका पूर्ण विस्तार 336 कोस का है। बृज वन यात्रा में प्रतिदिन ढाई कोस की परिक्रमा दी जाती है। आजकल परिवहन के साधन इतने उपलब्ध हैं कि कोई समय-सीमा नहीं रही। वन यात्रा एक ही है परिक्रमाएं अलग-अलग तरह की है।[10]

बड़ी परिक्रमा:-

यह भादों महीने की शुक्ल दसमीं को वृन्दावन से शुरू ही जाती है और यह वन यात्रा 15 या 16 दिन में भी पूर्ण हो जाती है। प्रायः इस यात्रा में 40 दिन लगते हैं। इस परिक्रमा के मार्ग में- मधुवन, सतोह, शांतनु कुण्ड, बहुलावन, राधा कुण्ड, कुसुम सरोवर, गोवर्धन, चन्द्र सरोवर जतीपुरा, डीग, कांमा, कामवन, वरसाना, संकेत, नन्दगांव, बड़ी बठैन, कोटवन, कोसी पैगाम, शेरगढ़, चीरघाट, बच्छवन, सेई, वृन्दावन, लोहवन, निधिवन बलदेव और गोकुल आदि पड़ते हैं।[11]

विशेष परिक्रमा:-

इस परिक्रमा में बृज के सभी लीला स्थलों की परिक्रमा दी जाती है। बृजवासी इस परिक्रमा को प्रत्येक माह की एकादशी, पूर्णमासी और पुरूषोत्तम मास के सभी दिनों में भी देते है।

मथुरा की विशेष परिक्रमा वर्ष में पांच बार दी जाती है।

1. वैशाख पूर्णिमा को वन-विहार के नाम से।
2. आषाढ़ शुक्ल एकादशी को देवसौनी एकादशी के नाम से।
3. आषाढ़ पूर्णमांसी को व्यास पूनो/मुड़िया पूनों को गोवर्धन व राधाकुण्ड की विशेष परिक्रमा दी जाती है।
4. कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थानी या प्रबोधनी एकादशी के नाम से।
5. लीला स्थलों की परिक्रमा और प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की परिक्रमा सुविधा अनुसार कम या अधिक हो सकती हैं।[12]

परिक्रमा का स्थल एवं मार्ग परिक्रमा की दूरी

1. मथुरा परिक्रमा - पांच कोस
2. मथुरा परिक्रमा - नौ कोस
3. गोवर्द्धन-राधाकुण्ड परिक्रमा - सात कोस
4. वृन्दावन परिक्रमा - पांच कोस
5. नंदगांव परिक्रमा - दो कोस
6. बरसाना परिक्रमा - दो कोस
7. कामवन परिक्रमा - सात कोस
8. गोकुल परिक्रमा - तीन कोस
9. बलदेव परिक्रमा -ढ़ाई कोस
10. मधुवन परिक्रमा - डेढ़ कोस
11. लालवन परिक्रमा - पौन कोस
12. कुमुदवन परिक्रमा - आधा कोस
13. बहुलावन परिक्रमा - दो कोस
14. भांडीरवन परिक्रमा - दो कोस
15. लोहवन परिक्रमा - डेढ़ कोस

पंचतीर्थी परिक्रमा:-

सावन मास की पंचमी से शुरू होगी है। इस यात्रा में पांच तीर्थों की यात्रा पांच दिन में पूरी की जाती है। यह एक छोटीसी परिक्रमा है।[13]

राम दल परिक्रमा:-

यह परिक्रमा कृष्ण दशवीं को वृन्दावन से प्रारम्भ की जाती है। यह परिक्रमा 15-16 दिन में पूरी की जाती है। यह परिक्रमा तेज गति से दी जाती है। बृजवासी इस यात्रा को लठामार यात्रा भी कहते हैं। इस परिक्रमा में अधिकतर साधु संत भाग लेते हैं।

दंडौती परिक्रमा:-

यह परिक्रमा विशेष रूप से पुरूषोत्तम मास में दी जाती है। यह परिक्रमा कष्ट कर होती है। सभी परिक्रमाएं पैदल और नंगे पाव दी जाती हैं। दडौती परिक्रमा को साष्टांग दंडवत लेटकर चलते हुए आगे बढ़कर पूर्ण की जाती है। दंडौती परिक्रमा सबसे अधिक कष्टसाध्य होती है। यदि साष्टांग दण्डवत करने की हिम्मत नहीं है, तो दंडौती परिक्रमाएं पैदल और नंगे पाव दी जाती है।[14]

अंतरगृही परिक्रमा:-

विश्राम घाट पर संकल्प लेने के बाद दूसरे दिन भादों मास की शुक्ल द्वादशी को प्रातःकाल मथुरा की अंतरगृही परिक्रमा करने की मान्यता है। सर्वप्रथम विश्रामघाट स्थित यमुना ही के दर्शन करके ठाकुर जी, श्री मदन मोहन जी, श्री दाऊ जी, तुलसी चबूतरा, श्री नाथ जी की बैठक में दूध भोग की सेवा करते हैं। तत्पश्चात् वराह पद्मनाभ, मथुरा देवी, दीर्घ विष्णु, भूतेश्वर, केशवदेव मंदिर, गोवर्द्धन नाथ, द्वारिकाधीश मंदिर, नारायण मंदिर तथा अन्य प्रसिद्ध देवी देवताओं के दर्शन करके परिक्रमा को पूरी करते हैं। परिक्रमा देते समय रास्ते में भजन कीर्तन करते चलते हैं। जगह जगह रास लीला का भी आयोजन होता है।[15]

मथुरा परिक्रमा/ पंच तीर्थी परिक्रमा:-

यह परिक्रमा पांच कोस की परिक्रमा होती है। इसे पंचकोसी परिक्रमा भी कहते हैं। यह परिक्रमा प्रत्येक मास की एकादशी पूर्णिमा या पुरूषोत्तम मास के प्रतिदिन दी जाती है। बृजयात्रा समापन करने से पूर्व भी मथुरा की परिक्रमा करते है। इस परिक्रमा को यदि सावन मास की पंचमी से शुरू करते हैं। पांच दिनों में पूरी करते हैं। यह भी पंचतीर्थी परिक्रमा कहलाती है।[16]

बृज यात्रा में बारह वन:-

1. मधुवन
2. तालवन
3. कुमुदवन
4. बहुलावन
5. कामवन
6. खिदिरवन
7. वृन्दावन
8. भद्रवन
9. भांडीरवन
10. बेलवन
11. लेहवन
12. महावन

बृज यात्रा में 24 उपवन:-

1. अरार
2. सतोहा
3. गोवर्धन
4. बरसाना
5. परमदरा
6. नंदगांव
7. संकेत
8. मानसरोवर
9. शेशशायी
10. बेलवन
11. गोकुल
12. गोपाल पुर
13. परासौली
14. आन्यौर
15. आदि-बदरी
16. विलासगढ़
17. पिसायौ
18. अंजनखौर
19. करहला
20. कोकिलावन
21. दधिवन
22. रावल
23. बच्छवन
24. कौरववन

बृज धाम के प्रसिद्ध 16 वटवृक्ष- 1. संकेत वट 2. भाण्डीर वट 3. जाव 4. श्रृंगार वट 5. वंशीवट 6. श्रीवट 7. जटाजुट वट 8. काम वट 9. मनोरथ वट 10. आशा वट 11. अशोक वट 12. केलि वट 13. ब्रह्म वट 14. रूद्र वट 15. श्रीधर वट 16. सावित्री वट

बृज धाम के प्रसिद्ध पांच महादेव- 1. मथुरा में - श्री भूतेश्वर महादेव 2. काम्य वन में - श्री कामेश्वर महादेव 3. गोवर्धन में - श्री चकलेश्वर महादेव 4. वृन्दावन में - गोपेश्वर महादेव 5. नंदगांव में - श्रीनंदीश्वर महादेवजी दर्शनीय है।[17]

गिरीश कुमार चतुर्वेदी के अनुसार- 12 वन और 24 उपवन के अतिरिक्त अडीग, तालवन, कमुदवन, बहुलावन, राधाकुण्ड, गुलाल कुण्ड, गांठोली, टोड़ का घना, डीग कामवन, भानोखर, अंचा गांव, कमई करहला, संकेत, प्रेम सरोवर, नंदगांव, बढ़े बाबू नन्देश्वर पिसाया, खादिर वन, उद्धव क्यारी, बठैन, जाव, कोकिलावन, कोटवन, कोसी, चमेली वन, शेशसायी, पैगाम, शेरगढ़, चीर घाट, राम घाट वच्छव वन, वृन्दावन, मांठ बलवन सेई, नरी सैमरी, चैमुंह, जैत, गोकुल आदि स्थान पर जाकर यात्रा मथुरा लौट आती है। बृज लोक जीवन में इस यात्रा को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। गांव और नगर के लोग किसी न किसी रूप में इस बृज यात्रा में सम्मिलित होते हैं।

बृज में हरेक पर्व, त्यौहार व उत्सव पर परिक्रमा देने की रिवाज है। इसलिए इन परिक्रमाओं को लोकपर्व भी कहा जाता है। बृज की इन परिक्रमाओं में सांस्कृतिक और सामाजिक उदात्त भावनाओं की अनुगूंज होती है। बृज की इन परिक्रमाओं से नैसर्गिक चेतना, शक्ति, धार्मिक परिकल्पना, सांस्कृतिक अनुशीलन की मौलिक व मंगलमयी प्रेरणा मिलती है। बृज यात्रा में अनेक वन उपवन, सरोवरों लीला स्थलों और अनेकों मंदिरों के दर्शन होते हैं।[18]

निष्कर्षतः बृजवासी आज भी बृज परिक्रमाओं को धार्मिक कृत्य और अनुष्ठान मानकर अति श्रद्धा और भक्ति के साथ करते हैं। बृज की परिक्रमाएं अपना सांस्कृतिक महत्व रखती हैं। उनमें सांस्कृतिक और सामाजिक उदात्त भावनाओं की अनुगूंज होती है। बृज परिक्रमाएं ग्रामीण पर्यटकों को उत्साहित करतीं हैं इसी कारण बृज परिक्रमाओं का प्रवर्तन और मान्यता आज तक कम नहीं हुई है। इन्हें लोक पर्व कहा जा सकता है। प्रत्येक ऋतु, प्रत्येक माह, प्रत्येक दिन, प्रत्येक पर्व, प्रत्येक त्यौहार व उत्सव पर परिक्रमा देने का बृज में विशेष रूप से प्रचलन है। बृज परिक्रमाओं से नैसर्गिक चेतना, धार्मिक परिकल्पना व संस्कृति के अनुशीलन उन्नयन मौलिक व मंगलमयी प्रेरणा प्राप्त होती है। बृज की सांस्कृतिक यात्रा के संबंध में स्वर्गीय विद्वान प्रभु दयाल मित्तल ने लिखा है कि बृज यात्रा बृज लोक जीवन का सुप्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है। इससे बृज के लीला स्थलों के दर्शन रमणीक वन उपवनों के दर्शन, प्राकृतिक सुषमा, संपन्नता, लता-कुंजों के निरीक्षण तथा कुंड सरोवरों में स्नान, आचमन का आनन्द प्राप्त होता है। इसके साथ साथ देवालय और देवमूर्तियों के दर्शन, रासलीला का सुखानुभव और विद्वतजनों के प्रवचन का भी लाभ मिलता है। इस यात्रा में प्रतिवर्ष हजारों यात्री भाग लेते हैं। भारत के भिन्न भिन्न भागों से आने वाले यात्रीगण जब एक साथ यात्रा करते हैं। तब देश की पंरपरागत सांस्कृतिक एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है।

संदर्भ

[1] दीक्षित, उमाशंकर, बृजलोक संस्कृति, सूकरक्षेत्र शोध संस्थान, कासगंज, 2006, पृ. 208
[2] वाजपेयी कृष्ण दत्त, बृज का इतिहास, पृ. 11-13
[3] वही, पृ. 15-16
[4] मित्तल, प्रभुदयाल, बृज का सांस्कृतिक इतिहास, साहित्य संस्थान मथुरा, 2001 पृ. 32
[5] वाराह पुराण- मथुरा महात्म्य - 152-11/12, बंगाल एशियाटिक सोसायटी
[6] बिहारी, गोस्वामी शरण, मथुरा और बृज मण्डल, हिन्दी सेवा सदन, 2001, पृ. 10
[7] विजय, बृज भूमि मोहिनी, रासेश्वर सदन श्री वृंदावन, संवत् 2048, पृ. 28
[8] मित्तल, प्रभुदयाल, बृज का सांस्कृतिक इतिहास, साहित्य संस्थान मथुरा, 2001 पृ. 10
[9] शोध सर्वेक्षण में प्राप्त साक्ष्य के आधार पर
[10] मथुरा-ए डिस्ट्रिक्ट मेमोअर, पृ. 34
[11] मित्तल, प्रभुदयाल, बृज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, पृ. 250-280
[12] वही, पृ. 363-380, 392-394
[13] दीक्षित, उमाशंकर, बृजलोक संस्कृति, सूकरक्षेत्र शोध संस्थान, कासगंज, 2008, पृ. 208
[14] बाजपेयी, के.डी., मथुरा, नई दिल्ली, मैकमिलन प्रेस, पृ. 15
[15] प्रान्तीय गजेटियर (मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा आदि जिले)
[16] शोध संस्थान - वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेवती वृन्दावन, कृष्ण जन्मभूमि का पुस्तकालय, मथुरा एवं मथुरा म्यूजियम एवं पुस्तकालय, मथुरा।
[17] गर्ग संहिता - वृंदावन खण्ड, अध्याय -1, श्लोक - 8
[18] भट्ट श्री नारायण, बृज भक्ति विलास - श्लोक 2-16, पृ0 34